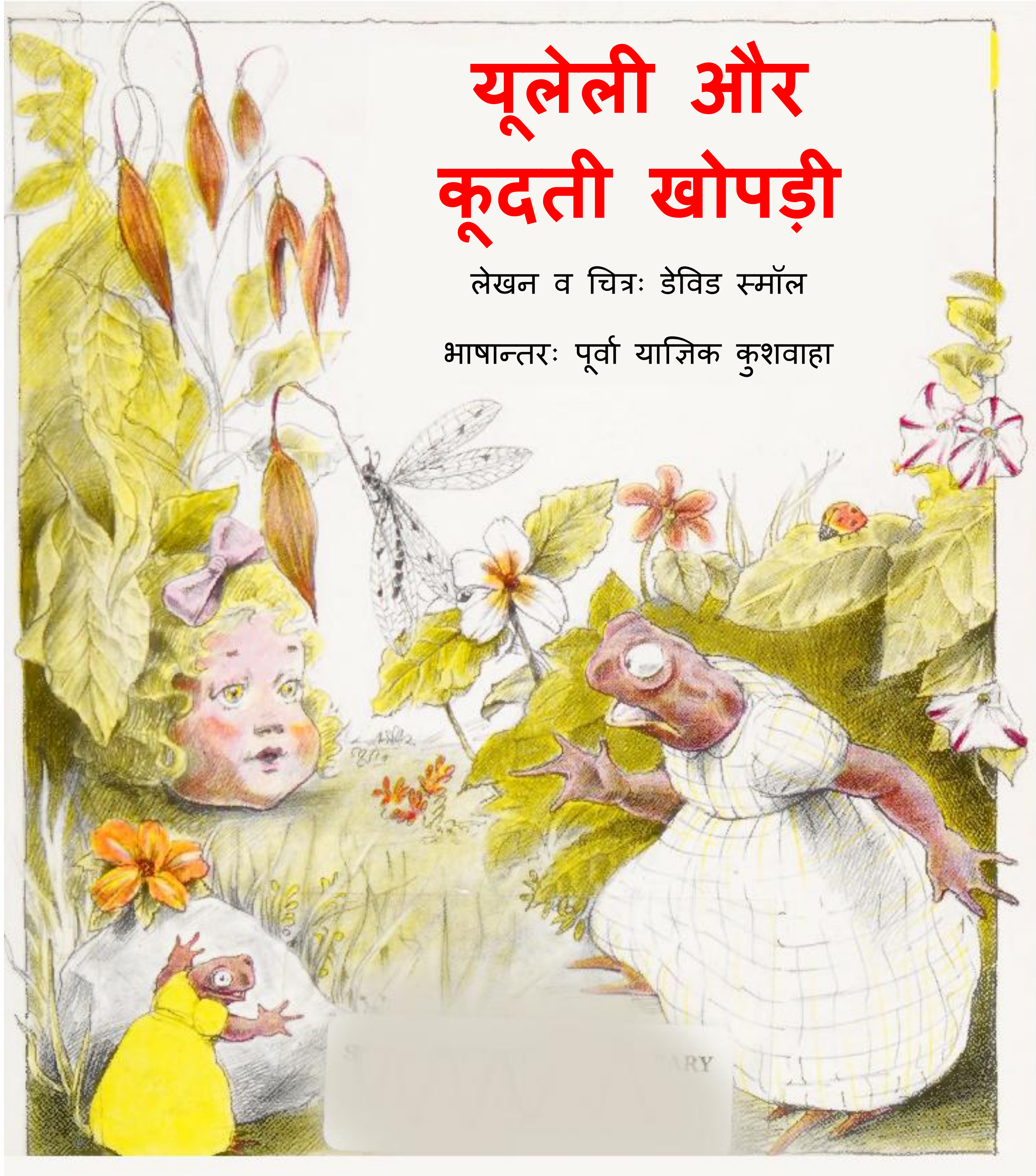
यूलेली और कूदती खोपड़ी

लेखन व चित्रः डेविड स्मॉल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

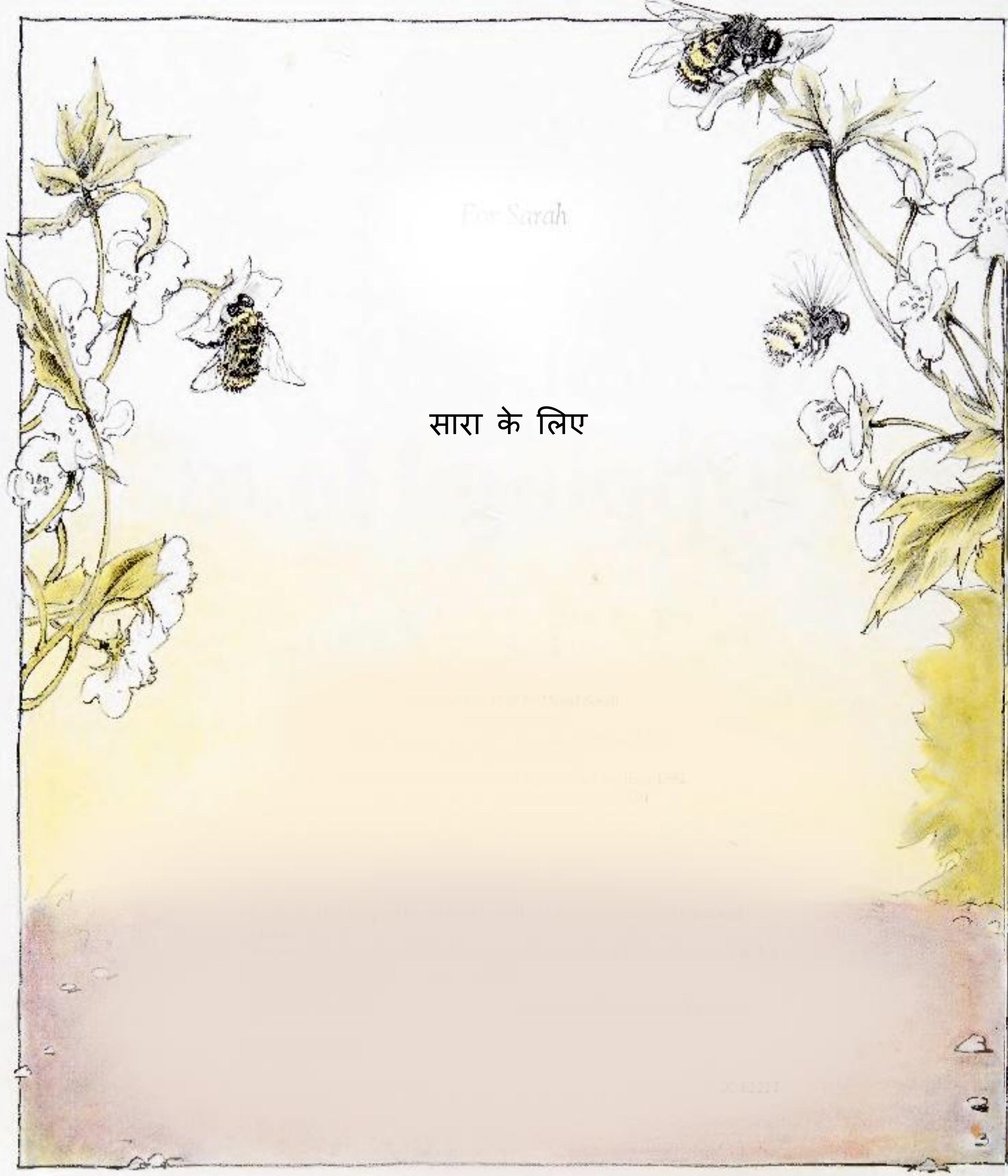


यूलेली और कूदती खोपड़ी

लेखन व चित्रः डेविड स्मॉल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

सारा के लिए



बसन्त का चमकदार दिन था। माँ लम्पस् और उनकी बेटी यूलूली अपनी रोज़ाना की सैर पर निकले थे। यूलेली कभी पैदल भी चलती, पर उसे अधिकतर अपनी बच्चा-गाड़ी में बैठ कर धकेले जाना पसन्द था।



''ओह! ये तो मिसेज़ शिन हैं,'' माँ लम्पस् ने कहा। वे मिसेज़ शिन को पहचानती भर थीं, पर उनकी झबरी पूंछ उन्हें बेहद आकर्षक लगती थी।

''मुझे अपनी बच्ची को देखने दो!'' मिसेज़ शिन ने बच्चा-गाड़ी में आतुरता से झाँकते कहा।



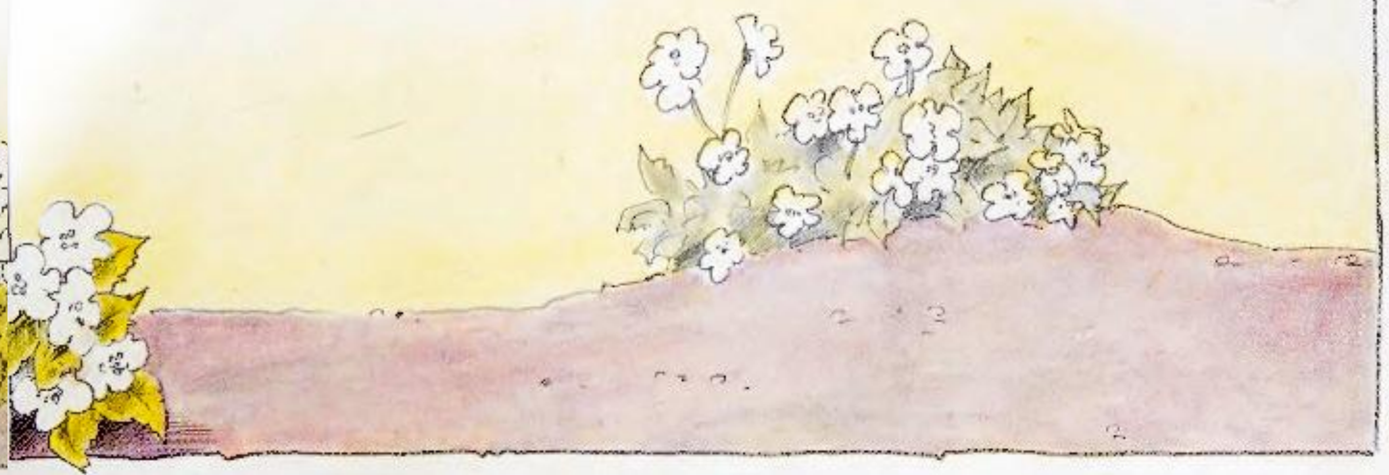
''क्या यह अच्छी बच्ची है?'' मिसेज़ शिन ने सवाल किया।

''ओह, हाँ,'' माँ लम्पस् बोलीं। ''यूलेली अद्भुत बच्ची है।''

''तो फिर तो वह बहुत तमीज़दार होगी,'' सजीली लोमड़ी, मिसेज़ शिन ने कहा। ''बहुत साफ़-सुथरी और खामोश!''

''दरअसल,'' माँ लम्पस् ने जवाब दिया, ''यूलेली बड़ी नहीं हई है, इसलिए उसका बरताव पूरी तरह बे-ऐब नहीं है। सभी बच्चों की तरह वह वह कभी-कभार गन्दी हो जाती है और कभी रोती भी है।''

मिसेज़ शिन ने माँ लम्पस् को गंभीर हो देखा। ''मेरे नौ बच्चे हैं,'' उन्होंने गुर्राकर कहा। "और हरेक बे-ऐब है। जिस दिन वे पैदा हुए, उसी दिन से मैंने उन्हें सही बरताव करना सिखाया है।''





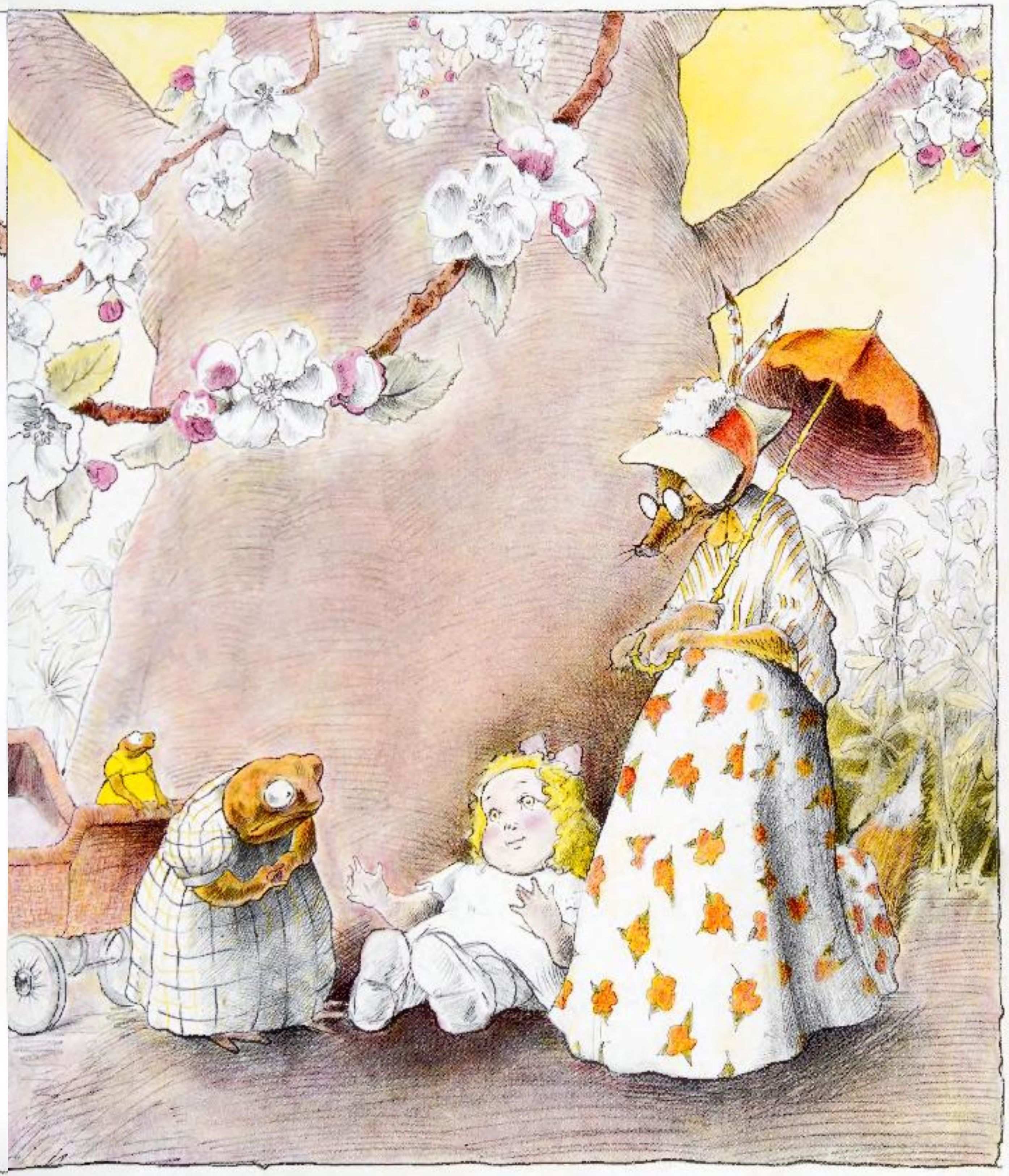
अब तक वे सेब के पेड़ों के कुंज में पहुँच गए और उसकी छाया में सुस्ताने रुके। माँ लम्पस् ने हाथ बढ़ा यूलेली का सिर थपथपाया।

"वहाँ देखो," मिसेज़ शिन बोलीं। "जब बात बे-ऐब बच्चों की हो ही रही है - एक बच्ची ऐसी है, जिस पर हर माँ को गुरूर होता।"

माँ लम्पस् और यूलेली ने पेड़ के तने से टिकी एक बच्ची को देखा। वह बच्ची न हिली-डुली, ना ही उसने एक भी शब्द बोला।

"अरे! यह बच्ची निपट अकेली यहाँ क्या कर रही है?" माँ लम्पस् ने चिन्ता से भर पूछा।

"यह तो कई दिनों से यहाँ है," मिसेज शिन ने धीमी आवाज़ में कहा। "एक पिकनिक के बाद वह यहाँ छूटी और इसे कोई वापस लेने ही नहीं आया।"



“तब तो इसे छोड़ दिया गया है!” माँ लम्पस् ने दुखी हो कहा। “इसकी देखभाल करने वाला कोई है ही नहीं।”

मिसेज़ शिन ने ठंडी साँस भरी। “बड़े दुख की बात है। मैं खुद इसे अपने घर ले जाती। पर मेरे नौ बच्चे हैं, कोई जगह ही नहीं है मेरे घर में। यह इतनी तमीज़दार और चुप . . . इतनी खामोश है। मैंने कई बार इससे बात की है, पर यह इतनी शर्मीली है कि एक शब्द तक नहीं बोलती। आपको इसे अपने घर ले जाना चाहिए।”





माँ लम्पस् बच्ची के पास झुकीं। “यह न जाने क्या खाती होगी?” उन्होंने कहा। “अब तक तो यह बेहद भूखी हो चुकी होगी।”

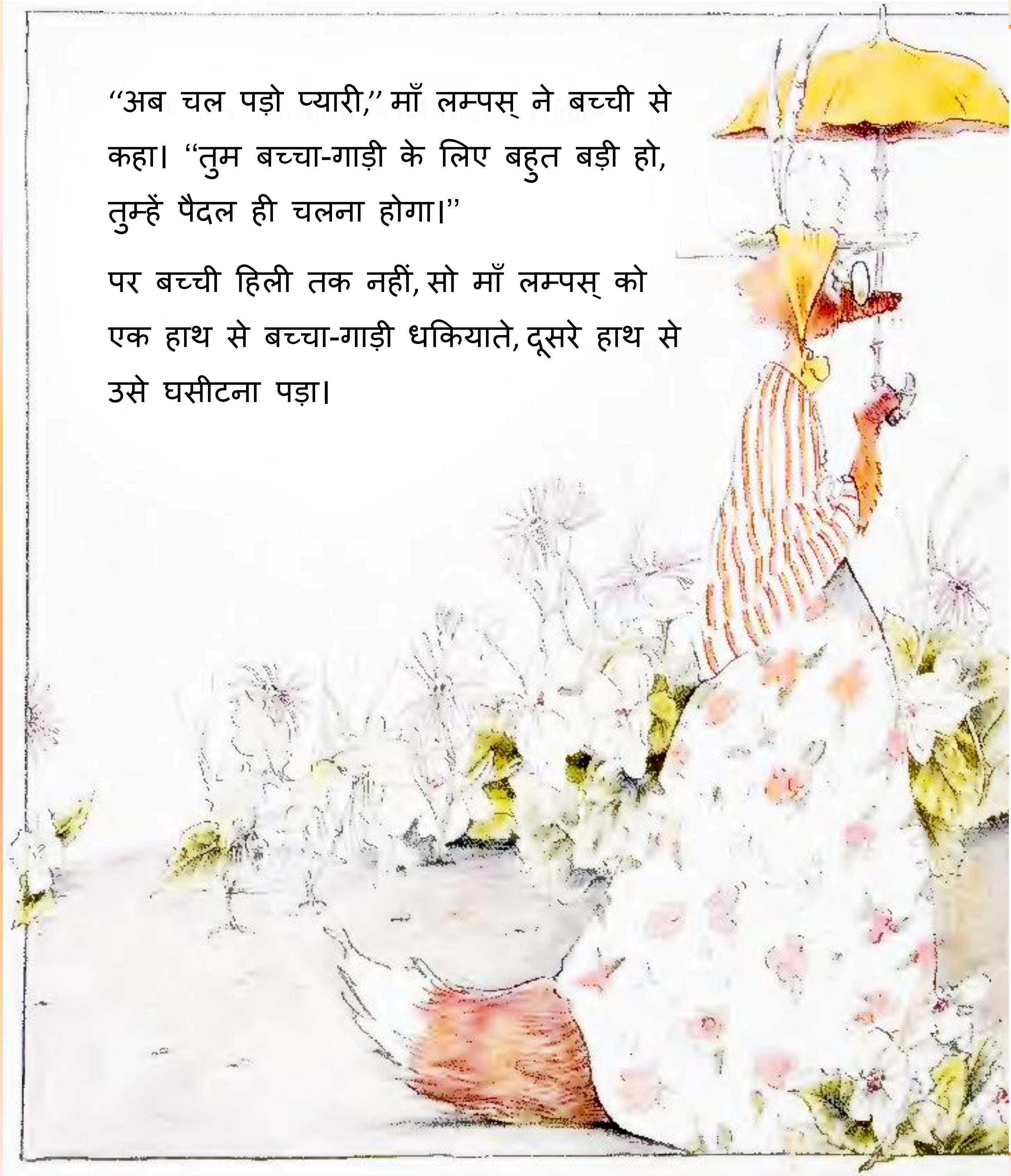
मिसेज़ शिन खुशी से हंसीं। “आपको कुछ भी खिलाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। और तो और यह कभी गन्दी भी नहीं होती, क्योंकि वह सावधानी से एक ही जगह बैठी रहती है। चलिए, उसे घर ले जाने में मैं आपकी मदद करती हूँ।”

“जी बेहतर,” माँ लम्पस् ने कुछ हिचकिचाते कहा।

“हम इसे यहाँ यों छोड़ तो नहीं सकते।” दोनों ने मिल कर बच्ची को उसके पैरों पर खड़ा किया।

“अब चल पड़ो प्यारी,” माँ लम्पस् ने बच्ची से कहा। “तुम बच्चा-गाड़ी के लिए बहुत बड़ी हो, तुम्हें पैदल ही चलना होगा।”

पर बच्ची हिली तक नहीं, सो माँ लम्पस् को एक हाथ से बच्चा-गाड़ी धकियाते, दूसरे हाथ से उसे घसीटना पड़ा।



जब वे बढ़ रहे थे, यूलेली ने नीचे झुक कर बच्ची से कहा, “तुम्हें खड़े हो जाना चाहिए, नहीं तो तुम्हारे कपड़े ख़राब हो जाएंगे।”

बच्ची ने तो कुछ न कहा, पर मिसेज़ शिन ने फ़ौरन जवाब दिया, “मैंने कहा था ना कि यह बच्ची चूँ तक नहीं करती। इसलिए वह सब बच्चों से बेहतर है। माँ लम्पस् आपकी बिटिया को इसे अपनी मिसाल बना लेना चाहिए।”



उसी पल बच्ची का सिर धड़ से अलग हुआ और घास में लुढ़क गया।

मिसेज़ शिन ने उसे जल्दी से उठाया, अपने रुमाल से झाड़ा और धड़ पर वापस लगा दिया।



''खैर,'' वे बोलीं, ''शायद यह बच्ची उतनी बे-ऐब भी नहीं।''

यूलेली और माँ लम्पस् बच्ची के चेहरे को फ़िक्र से भर देखने लगे। पर इस दुर्घटना के बावजूद वह पहले की तरह मुस्कुरा रही थी।



घर के रास्ते में बच्ची का सिर छह बार और गिरा। ऐसा हाने पर यूलेली हर बार हंसी। उसे लगा कि यह तो एक बेहतरीन तरकीब थी।



आख़िरकार वे घर पहुँचे। माँ लम्पस् ने मिसेज़ शिन को चाय पीने अन्दर बुलाया। माँ लम्पस् ने बिस्कुट आगे बढ़ाए। यूलेली ने तश्तरी अपने सामने आते ही दो बिस्कुट उठाए और उनमें से एक नई बच्ची को दिया। पर उसने एक टुकड़ा तक नहीं खाया, और न ही यूलेली को शुक्रिया ही कहा।

काफ़ी देर हो चुकी थी, सो मिसेज़ शिन ने विदा ली और घर लौट गईं।



अगली सुबह माँ लम्पस् ने तय किया कि बच्चों को बाहर टहलाने ले जाया जाए। यूलेली तो तैयार हो कर बाहर खेल रही थी। सो माँ लम्पस् ने अपनी नई बच्ची को तैयार करना शुरू किया।

अब क्योंकि नई बच्ची पैदल चलने से इन्कार करती थी, साथ ही बच्चा-गाड़ी के लिए बहुत बड़ी भी थी, माँ लम्पस् ने सोचा कि सिर्फ़ उसके सिर को ही ले जाया जाए। सिर का आकार बच्चा-गाड़ी में ठीक से समा रहा था।

"अब, यह यूलेली भला कहाँ है? उन्होंने कहा। और उसे तलाशने निकलीं।





कुछ ही मिनटों बाद यूलेली अन्दर आई। उसने माँ को खोजा और पाया कि बच्चा-गाड़ी खुले दरवाज़े के पास खड़ी है।

"अरे वाह!" उसने कहा, "तो हम सवारी करने जा रहे हैं।" इतना कह वह बच्चा-गाड़ी में चढ़ी और खुद को नई बच्ची की खेपड़ी के पास पाया।

"हलो!" यूलूली ने कहा।

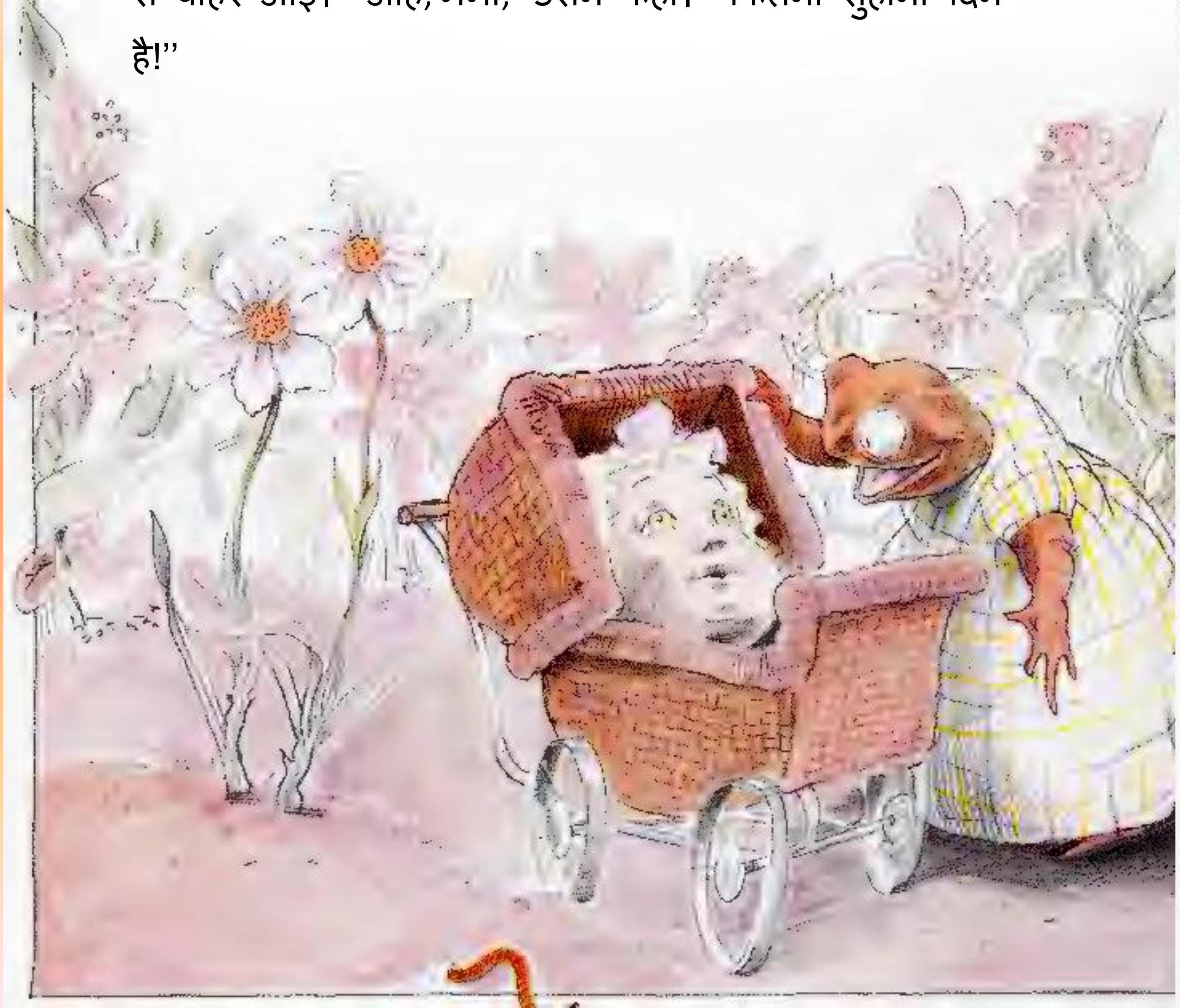
नई बच्ची ने कोई जवाब नहीं दिया।





अचानक यूलेली ने ग़ौर किया कि बच्ची की खोपड़ी अन्दर से खोखली है। वह उसमें घुस गई। घुसने की जगह तो तंग थी पर अन्दर इतनी जगह थी कि इधर-उधर घूमा जा सके। यूलेली ने पाया कि वह नई बच्ची की काँच से बनी आँखों से बाहर देख सकती है।

माँ लम्पस् लौटीं। उन्हें लगा कि यूलेली पक्की तौर पर बाग में कहीं खेल रही होगी। तो उन्होंने सोचा कि वे नई बच्ची को साथ ले यूलेली को ढूढ़ने निकल जाएं। जैसे ही बच्चा-गाड़ी धूप में बाहर आई, यूलेली बोलने लगी, उसकी आवाज़ नई बच्ची के मुँह से बाहर आई। ''ओह, ममा,'' उसने कहा। ''कितना सुहाना दिन है!''





माँ लम्पस् अचरज से उछल पड़ीं, तब उन्होंने तसल्ली की साँस ली।

''खैर,'' उसने कहा, ''अब जब तुम बोलने लगी हो, तो तुम्हें खाने को भी कुछ चाहिए होगा।''

''जी हाँ, मेहरबानी से,'' यूलेली ने जवाब दिया।

''तो एक बढ़िया कीड़े के बारे में क्या ख़याल है?'' माँ लम्पस् ने पूछा। उन्होंने नीचे झुक एक मोटा केंचुआ उठाया और सिर के मुँह में डाल दिया।

अन्दर यूलेली ने केंचुए को गपागप खा लिया, और बोली, ''यम! स्वादिष्ट!''



''तो बताओ,'' माँ लम्पस् ने खुश हो पूछा, ''पीने को कुछ चाहिए?''

''जी, मुझे प्यास लगी है,'' वह छोटी-सी आवाज़ में बोली।

माँ लम्पस् को बरसाती पानी से भरा अखरोट का छिलका मिला। उन्होंने उसे उठाया और उसे नई बच्ची के मुँह से लगाया।



पानी अन्दर गया और यूलेली चीख पड़ी।

''रुको माँ! मदद करो! बहुत हुआ!'' यूलेली खाँसी-हकलाई, हिली और छटपटाई। उसने खोपड़ी से बाहर निकलने की कोशिश की। पर सिर्फ़ अपने पैर ही निकाल पाई।



माँ लम्पस् बच्ची के सिर को उछल कर नीचे आ दो छोटे पैरों पर खड़े हो, हवा में उछलते देख चौंक गईं। इतनी देर में तो खोपड़ी बाग में कूदने लगी।

उसी वक़्त मिसेज शिन आ गईं। "शुभ दोपहर!" उन्होंने कहा। "और आज नई बच्ची कैसी है?"



"वह तो भाग गई," माँ लम्पस् ने घबरा कर बताया।

"क्या?" मिसेज़ शिन ने पूछा। "असंभव! वह तो सबसे उम्दा बच्ची है!"

"सच कह रही हूँ," माँ लम्पस् ने कहा। "वह उछलती-कूदती भाग निकली। मुझे कहीं खोजे नहीं मिल रही है।"



"आप पगला तो नहीं गईं," मिसेज़ शिन ने कहा। "वह ऐसा कर ही नहीं सकती। यही तो उसकी सबसे अच्छी बात है - माँ के लिए वह कोई परेशानी खड़ी कर ही नहीं सकती!"

"पर वह भाग गई है!" माँ लम्पस् उसे बाग में ढूंढ़ते खूब रोई-धोईं।

अचानक वह सिर पास की झाड़ियों से उछल बाहर आया।

"लो! वह यहाँ है!" माँ लम्पस् चीखीं।

एक छलांग के साथ वह खोपड़ी फाटक के ऊपर थी। और दूसरी छलांग के साथ मिसेज़ शिन की बाँहों में।





मिसेज़ शिन लड़खड़ाईं और कीचड़ के गड्ढे में जा गिरीं। वे उसमें फिसलीं, उन्होंने हाथ-पैर छपछपाए और तब गुस्से में भौंकती हुई जंगल में गायब हो गईं।



सिर ज़मीन पर गिरा और धड़ से एक चट्टान से टकराया।

और यूलेली बाहर निकल आई!

माँ लम्पस् उसे उठाने दौड़ीं।



“ओह ममा,” यूलेली बोली। “मुझे बहुत ही मज़ा आया! पर तब इतना पानी भर गया कि तुम मुझे दिखाई ही नहीं दीं। फिर खूब शोर हुआ, मैं इधर-उधर लुढ़की, तब मैं उछली . . . और अब तुम सामने हो!”

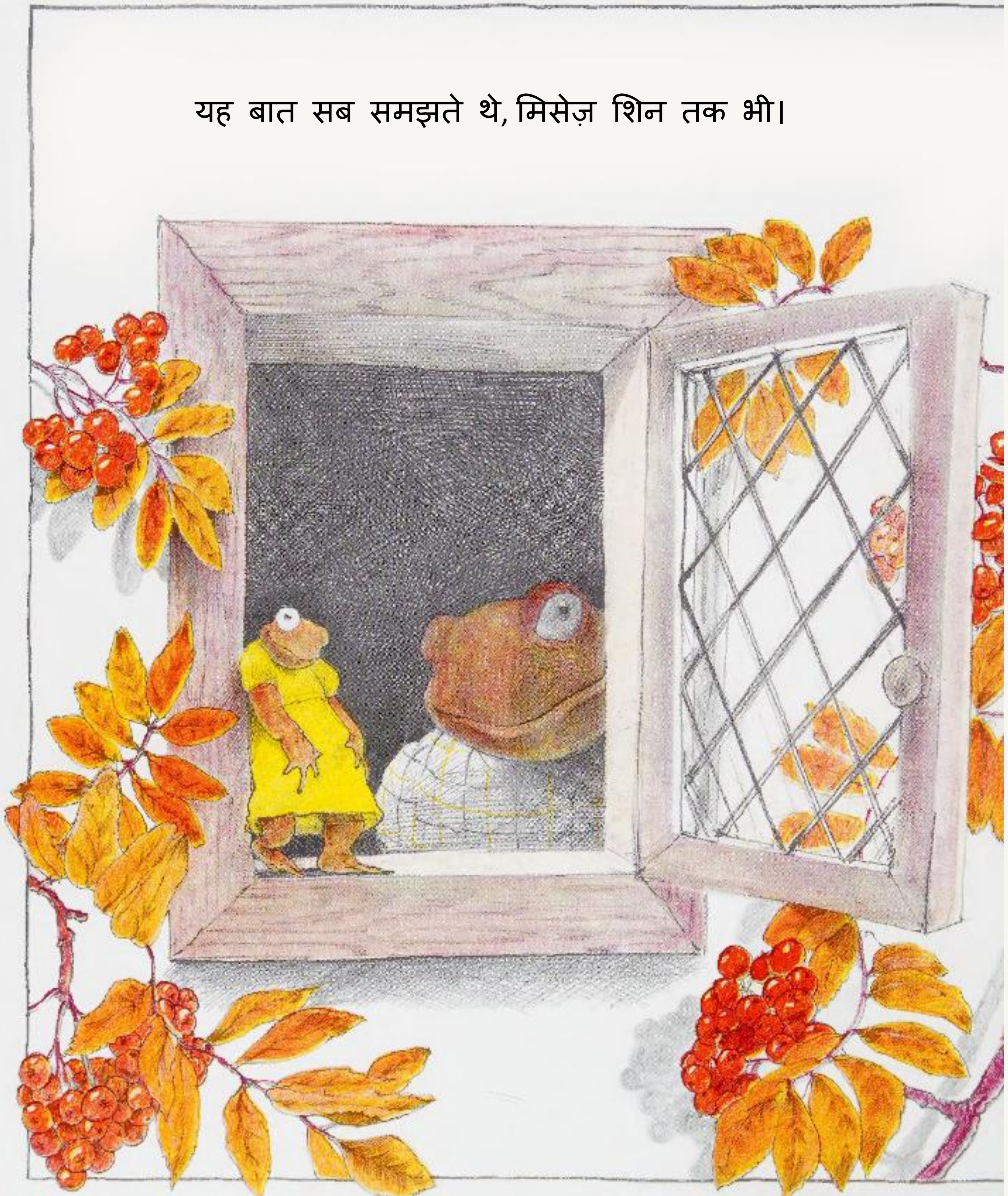
माँ लम्पस् यूलेली को घर के अन्दर ले गईं, उसे कम्बल में लपेटा, और हर लपेट के साथ उसे चूमा। और अपनी बेवकूफ़ी पर हंसती गईं।



इस घटना के बाद नई बच्ची - सिर धड़ पर ठीक से लगा देने के बाद - हमेशा-हमेशा के लिए एक कुर्सी पर , बिना कुछ किए बैठी रही। जबकि यूलेली दौड़ती, गाती और खेलती रही। और जो भी माँ लम्पस् से पूछता, वे जवाब देतीं, “मेरे दो बच्चे हैं। एक पूरी तरह बे-ऐब है, माँ के लिए कोई परेशानी पैदा नहीं करती। दूसरी नटखट है, कभी शोर मचाती है, अक्सर अपने फैलावड़े को साफ़ नहीं करती। पर मैं उसे हज़र गुना ज़्यादा प्यार करती हूँ।”



यह बात सब समझते थे, मिसेज़ शिन तक भी।



माँ लम्पस् (एक मेंढ़की) अपनी छोटी-सी बिटिया यूलेली को सैर कराने ले जाती हैं। वहाँ उनकी मुलाक़ात मिसेज़ शिन (एक लोमड़ी) से होती है। वे कहती हैं कि उनके नौ के नौ बच्चे एकदम बे-ऐब हैं और यूलेली के लिए (जो कभी-कभार शैतानी करती है) मिसाल बन सकते हैं। मिसेज़ शिन सुझाती हैं कि माँ लम्पस् को घास पर अकेली बैठी बच्ची को घर ले जाना चाहिए क्योंकि वह यूलेली को सही बरताव सिखा सकती है। यह छोड़ दी गई बच्ची दरअसल एक गुड़िया है, जैसा पाठक समझ ही लेंगे। पर दोनों माँएं उसे अपने ही जैसा एक जीव मानती हैं। तब भी, जब उसका सिर, धड़ से अलग हो लुढ़कता जाता है। स्मॉल की यह क़िताब मौज-मस्ती से भरी है। इसके आकर्षक चित्र जंगल के मोहक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। वे सुन्दर हल्के रंगों और मानवीकृत चरित्रों का मज़ाकिया चित्रण करते हैं।

- पब्लिशर्स वीकली